श्रमदान : फ्लोराइड प्रभावित ग्रामों में मिलने लगा शुद्ध पानी

काला पानी के बाद छोटा छीतरी और बैकपुरा भी बने इसके उदाहरण

समिति के माध्यम से हो रहा जल वितरण

धार। उमरबन विकासखंड के ग्राम छोटा छीतरी और बैकपुरा में लोगों को जब समझाइश दी गई तो उन्होंने श्रमदान के माध्यम से ऐसी पहल कर डाली कि वे पानी के मामले में आत्मनिर्भर हो गए। इन दोनों गांवों के भूजल में फ्लोराइड की मात्रा बहुत अधिक है। इससे यहां शुद्ध पानी की जरूरत महसूस की जाती रही है। इसके लिए बकायदा ग्रामीणों ने एक समिति बनाई। पैसा एकत्र किया और उसके माध्यम से सरकारी कुएं पर मोटर स्थापित की और श्रमदान से पाइप लाइन बिछाई। सोमवार को ग्रामीणों का सपना पूरा हुआ और अब वे अपने-अपने मोहल्लों में टंकी व पाइप लाइन के जरिए शुद्ध पानी ले रहे हैं। इस काम में उन्हें एक निजी संस्थान ने मदद की।

लोक विज्ञान संस्थान (पीआईएस) देहरादून के माध्यम से ग्राम छोटी छीतरी और बैकपुरा, कालापानी के एक वार्ड में ग्रामीणों को फ्लोराइडयुक्त पानी से मुक्ति के लिए किए जा रहे प्रयास में समझाइश दी गई। इन प्रयासों का ही नतीजा है कि ग्रामीणों ने अपनी सूझबूझ से काम शुरू कर दिया है।

साथी हाथ बढ़ाना...

ग्राम छोटा छीतरी में सरकारी कुएं से पानी लाने के लिए श्रमदान की भूमिका महत्वपूर्ण रही। यहां तक कि पाइप लाइन बिछाने आदि के काम में भी महिला-पुरुषों ने बराबर भागीदारी की। बैकपुरा में एक सरकारी कुआं नाले का पानी मिल जाने से दूषित हो गया था। ऐसे में दूर के एक सरकारी कुएं से पानी लाने के लिए श्रमदान किया गया। इस पर बड़ी सफलता मिली। इन दोनों ही गांव के सैकड़ों लोग इस समय स्वच्छ पानी पी रहे हैं। इस कार्य का सोमवार को विधिवत शुभारंभ भी किया गया।

खुद चलाएंगे योजना

ग्रामीणों ने कुएं पर जनभागीदारी के माध्यम से पाइप लाइन बिछाई और रहवासी क्षेत्रों में पानी पहुंचाया। इस गतिविधि में फ्रेंक वॉटर नामक संस्थान ने आर्थिक रूप से मदद की। इस कार्य में पीआईएस की पूजासिंह रघुवंशी ने मार्गदर्शन दिया।

पूजा ने बताया कि ग्रामीण अपने ही दम पर अब आगामी दिनों में भी योजना चलाएंगे। उन्होंने अपनी एक समिति बनाई है। पैसे एकत्रित कर बैंक में खाता खोला है। साथ ही इस योजना का संचालन करने के लिए भी व्यवस्थाएं की हैं।-**निप्र**

ग्राम छोटा छीतरी में लोगों को मिल रहा है स्वच्छ पानी।